।। भक्त ऊपजे को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ भक्त ऊपजे को अंग लिखंते ||

||साखी||

भक्त भाव सूं ऊपजे || सुणज्यो सब संसार ||
जन सुखदेवजी केत हे || सब बिध बात बिचार ||१||

महासुख के अमरपद की भक्ती सतगुरु यही सतसाहेब है यह भाव आने से उपजती है । जबतक सतगुरु ये साहिब है यह भाव नही आता तबतक हट करके लाख प्रयत्न करने पे भी महासुख के देश की भक्ती शिष्यमे कभी नही उपजती यह सभी संसार के नर–नारीयो कान खोलके सुन लो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,अमरपद की भक्ती सतगुरु के प्रति भाव न आने से उपजती ही नही और भाव आने पे उपजे बगैर रहती नही यह मैने सभी प्रकार की विधियो का गहन विचार करके देखा इसलिए अमरपद की भक्ती सतगुरु यही साहेब है यह भाव आने पे ही सिर्फ उपजती है यह सभी जगत के नर–नारीयो ध्यान देकर समझो । ||१||

प्रथम दया बिचारी ये || छूटे कडवी बाण ||
तो भक्ति सुखराम के || जद तद ऊपजे आण ||२||

महासुख के अमरपद की भक्ती अंतर मे सभी दु:खी जीवो पे तथा संतो पे दया रहने पे जल्दी से जल्दी समय आते ही उपजती तथा सभी दु:खी जीवों से तथा अमरपद के संतो से कड्वी बोली तथा कड्वा रुख न रखते हुये मिठी बोली तथा मिठा रुख रखनेसे जल्दी से जल्दी समय आने पे भक्ती उपजती याने उसे मनुष्य देह मे भक्ती उपज सकती है । यदि उसे उसी मनुष्य देह मे भक्ती नही उपजी तो वह जीव ८४ लाख योनी में न जाते जबतक उसे भक्ती नही मिलती तबतक वह हंस मनुष्य देह में ही आ सकता ऐसी संभावना सतस्वरुप ज्ञान समजसे दिखती । ऐसा क्यों?तो काल को मारनेवाली सतस्वरुपी संत प्रकृती की दया वह हंस रखता । उसमे वह संत स्वभाव प्रगटता ।(संतो पे दया कैसे ? संत ये परमात्मा के भक्त रहते । परमात्मा महादयालू है फिर संतों पे परमात्मासे अधिक जगतके मनुष्यकी दया कैसे बनेगी?जबाब–साधू यह फकिर स्वभाव का होता । उसे माया के कोई चीजकी आवश्यकता जरासी भी महसूस नही होती । ऐसे साधू धूप,थंडी,बारीश,भूख,प्यास इन चिजो का कोई विचार नही करते व परमात्मा की भक्ती शुरवीरता से समय बेसमय कु स्थिती मे भी करते रहते । कडी थंडी मे,कडी धूप मे,बिना खाये,बिना पिये रामस्मरण मे मस्त रहते । ऐसे साधूको देखकर दयावान मनुष्य को उनके शुरवीरताके प्रती दिव्य आदर भी आता और सुखमे ये साधू भक्ती कर सके इसकी दया भी आती । इसलिए दयालू मनुष्य उनको कुटीयाँ बना देता,थंडीसे बचनेके लिये गरम कपडे पहुचाता धूपसे बचनेके लिए पंखा आदि की व्यवस्था करता,भूखे प्यासे न रहे इसलिये रोटी व जल की उपलब्धता करता व साधू सहज मे ज्यादा भजन कर सके

व उसे परिस्थितीयो की कम से कम दिक्कत रहे ऐसी कालको मारनेवाली सतस्वरुपी संत प्रकृतीसे दया रखता ऐसी संत प्रकृती की दया जिस मनुष्यमे जन्मती वह संत प्रकृतीसे दया रखता ऐसी संत प्रकृतीकी दया जिस मनुष्यमे जन्मती वह संत प्रकृतीका मनुष्य मनुष्यके देहमे जबतक मोक्ष मे नही जाता तबतक मनुष्य देह मे ही आ सकता ऐसी सतस्वरुप ज्ञान से संभावना दिखती ।)।।२।।

साख शब्द कूँ कान दे ।। बेसे संगत मे जाय ।।
तो भक्ति सुखराम के ।। जद तद ऊपजे आय ।।३।।

कैवली संतो के संगत मे बैठकर सतगुरु जो कैवल्य देश की साखीयाँ तथा शब्द वाणी सुनाते है वह कान देकर सुनने पे और सुनने के बाद समज लाने से कैवल्य भक्ती शिष्य के घट मे जल्दी से जल्दी उपजती याने शिष्य को उसी मनुष्य देह मे भक्ती उपज सकती है । यदि उसे उसी मनुष्य देह मे भक्ती नही उपजी तो वह जीव कैवल्य संत प्रकृतीका बन जाने कारण ८४ लक्ष योनी मे न जाते जबतक उसे मोक्ष नही मिलता तबतक वह हंस मनुष्य देह मे ही आता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३।।

संताँ की संगत करे ।। ज्यूँ त्यूँ करके आण ।।
तो ऊपजे सुखराम के ।। भक्ति भेद बखाण ।।४।।

कैवली संत के संगत मे जाने के लिये आडी आनेवाली कोई भी कठिणाई को न जुमानते जैसे तैसे करके कैवली संत की संगत करता है । ऐसे सतसंगी को कैवली भक्ती का भेद प्रगट होता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बखाण कर रहे है ।।।४।।

हरजन के घर जाय कर ।। अन जळ करे अहार ।।
ईण गुण सूं सुख राम के ।। ऊपजे भक्त बिचार ।।५।।

कैवल्य भक्तीको प्रगट करनेका कभी सोच नही आया और नही आयेगा ऐसा भी जगत का कोई मनुष्य हरीजन के घर जाकर उनके घर का अन्न व जल को आहार करेगा तो संतो के घरके अन्न–जल के प्रताप से उस अन्न–जल ग्रहण करनेवाले मनुष्य के मन मे कैवली भक्ती करनेका विचार आयेगा व उसमे आगे पिछे भक्ती प्रगट होगी ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।५।।

आसो आदर भाव को ।। जे नर राखे कोय ।।
तो भक्ति सुखराम के ।। जद तद ऊपजे जोय ।।६।।

भाग्य मे कैवल्य भक्ती उपजने का कोई भी योग नही है ऐसा भी जगत का कोई भी मनुष्य कैवली संतो का आदर भाव रखेगा तो भाग्य हो या न हो ऐसे आदर भाव रखनेवाले हर मनुष्य मे महासुख देनेवाली कैवली भक्ती उपजती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के नर–नारीयो को समजा रहे है ।।।६।।

हरजन की म्हेमा करे ।। पख खाँचे बिन छेह ।।
तां कूं हर सुखराम के ।। भक्ति दे इण देह ।।७।।

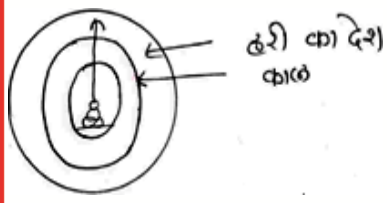

हरीजन याने काल को जितकर रामजी के देश मे पहुँचे हुये संत की महिमा करता है और त्रिगुणी मायामे रचेमचे हुये और साहेब से बेमुख है ऐसे जगत के सागट लोगो के सामने सागट लोगो का अती विरोध सहन करके अंतीम तक हरीजन का पक्ष लेता है ऐसे मनुष्य मे हर उसे उसी देह में बडे सुख के देश की कैवल्य भक्ती प्रगट करा देता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर-नारीयो को समझा रहे है ।।।७।।

हरजन के सामो मिले ।। जे लुळ लागे पाय ।।
ताँ कूं सुण सुखराम के ।। भक्त ऊपजे आय ।।८।।

जैसे जगतमें विवाह मे लड्की पक्षवाले स्वयम् को छोटा समझकर बरातके सामने जाते और झुक-झुककर लड्के पक्षवालोका आदर करते और पैर पड्ते। इसीप्रकार कोई मनुष्य स्वयम्को साधारण मनुष्य और हरीजनको साहेब समजकर आनंद के साथ सामने दर्शन लेने जाता और झुक-झुककर हरीजन का आदर करता और पैर पड्ता ऐसे मनुष्य मे हरीजन में प्रगट हुईवी कैवल्य भक्ती आकर प्रगट होती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके सभी नर-नारीयो को बडा पकड्कर कहते है । झुक-झुककर प्रणाम कैसे-टिप-(जैसे लड्कीवालो को लड्के पक्ष के प्रती इन्होंने हमारी कन्या को अपने पदर-पल्लो मे समा लिया याने अपना बना लिया और उसे आगे भी फूलो की तरह सुखी रखेगे जैसे हमने रखा यह भाव रहता इसीकारण झुक-झुककर पैर पड्ते,आदर करते । ठिक ऐसाही भाव साहेब न पाये हुये जीव को हरिजन-संत के प्रती रहता की संत मुझे अपने पल्लो मे याने शरण में ले लेंगे या ले रहे है और यह संत मुझे काल के महादु:खो से निकालकर साहेब के आनंदपद के महासुख मे पहुँचायेगे या पहुँचा देगे ।।।८।।

हरजन सूं अडबी करे ।। झगडे सन्मुख आय ।।
ताँ घट सूं सुखराम के ।। जद तद भक्ति जाय ।।९।।

महासुख के पद मे पहुँचे हुये हरीजन और जिनके सत्तासे महासुखका पद चाहनेवाला कोई भी मनुष्य महासुख में पहुँचा सकता ऐसे संतसे जगतका कोई भी मनुष्य अड्वी करता याने उनके कार्यमे व्याधी उत्पन्न करता और हानी पहुँचाता वह संत स्वयम् भक्ती नही कर सके तथा संत कार्य न चला सके ऐसा उस संतके साथ झगड्ता ऐसे मनुष्य की पहले कमाई हुई कैवल्य भक्तीके सुकृत पकड्कर कोई भी अन्य भक्ती सदाके लिये तबके तब चली जाती याने फलहीन हो जाती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर-नारीयो को कह रहे है ।।।९।।

भूलो चूको आण के ।। जे मे ले परसाद ।।
या गुण सूं सुखराम के ।। छुटे बिषे जुग बाद ।।१०।।

कोई नर–नारी भुल चूक मे याने जगत के लोग साधारण मनुष्य को जैसे भोजन प्रसाद ग्रहण कराते है ऐसा हरीजन को हरीजन न समजते साधारण मनुष्य समजकर भोजन प्रसाद कराता । इस गुणसे उस नर–नारी का जम के दरबार में गले में फासी डलकर ले जानेवाले विषय रस छुट जाते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर–नारीको कहते है ।१०।

हरजन जहाँ चर्चा करे ।। जे देखण कूं जाय ।।
या गुण सूं सुखराम के ।। भक्त ऊपजे आय ।।११।।

जैसे जगत मे जगत के नर–नारी कही माया के संतो के किर्तन प्रवचन सहजरुप मे सुनने जाते है ऐसेही कोई केवली संतो की चर्चा,ज्ञान बिना सोच समजके सुनने जाते है । इस गुण से उस नर–नारी के घट मे कालके मुखसे निकालनेवाली अमरपदकी भक्ती उपजती है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।११।।

को गतीयारो होय के ।। जन कूं देखे आण ।।
या गुण सुं सुखराम के ।। जद तद पलटे बाण ।।१२।।

जगत का माया मे रचामचा हुवा कोई मनुष्य अनेक संख्या मे संत के भक्त संतो को देखने जाते इसलिये वह मनुष्य भी संतोसे भक्ती लेने का कोई विचार न करते गम्मत जम्मत से देखने जाता । इस गुण से उस मनुष्य की उन परमपदी संत को देखतेही तब के तबही मायावी मुखवाणी पलटकर संतो की मुखवाणी बनती है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज संसार के सभी नर–नारीयो को कहते है ।।।१२।।

ले प्रसादी संत की ।। करे टेल ब्हो भाँत ।।
या गुण सूं सुखराम के ।। ऊपजे लिव की खाँत ।।१३।।

कैवली संतो के घरका भोजन प्रसाद ग्रहण करता है और संतो की सेवा तन मन से बहोत प्रकार से करता है तथा रातदिन संतोके सेवामे लिव रखता है इस गुणसे उस मनुष्यमे कैवल्य भक्तीकी विधी विधीसे लिव लगती है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।१३।

हरजन की म्हेमा करे ।। जे आडो फिर कोय ।।
या गुण सूं सुखराम के ।। जद तद हरजन होय ।।१४।।

आडा फिर फिरकर याने हरीजन को विनती कर करके हरीजन की अंतर से महिमा याने उत्सव बधावा करते है इस गुण से वह मनुष्य हरीजन बन जाता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के नर–नारीयो को कहते है ।।।१४।।

जिण घर की सुण चीज रे ।। हरजन के अंग लाय ।।

या गुण सूं सुखराम के ।। जद तद जागे भाग ।।१५।।

किसी के घर की कोई भी चिज हरीजन के उपयोग मे लाये जाती है इस गुण से उस घर का नर नारीयो का महासुख का कैवल्यपद उपजने का भाग जागृत होता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर नारीयो को कहते है ।।।१५।।

संता के प्रताप सूं ।। ऊपजे भक्ति भेव बिचार ।।
ग्यान ध्यान सुखराम के ।। शुभ करणी मन मार ।।१६।।

कैवली संतो के ज्ञान प्रतापसे शिष्यके भ्रम मिटते और कैवल्य भक्तीका भेद प्रगट कराने का विचार उपजता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतगुरु के प्रताप से विषयरस मे भिना हुवा मन मरता है और अमरपद मे पहुँचानेवाले शुभकर्म करनेवाला मन जागृत होता है । ऐसे संतो के प्रताप से शिष्य मे कैवल्य ज्ञान की समज आती और कैवल्य पद का ध्यान लगता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर नारीयो को कहते है ।।।१६।।

जन के पग तळ आय के ।। जे जीव छाडे प्राण ।।
ताँ कूं भक्ति ऊपजे ।। के सुखदेव बखाण ।।१७।।

कैवली संतोके पैरोके निचे तथा गाडी घोड्के निचे आकर प्राण त्यागते है ऐसे प्राणोको कैवली संतोकी सत्ताके कृपासे मनुष्य देह मिलता है और उस प्राणमे कैवल्य भक्ती उपजती है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके सभी नर नारीयो को समजाते है ।।।१७।।

ज्हाँ ज्हाँ हरजन पग धरे ।। वाँ रज जे मुख जाँय ।।
या गुण सुखराम के ।। भक्त ऊपजे आय ।।१८।।

इस धरती पे जहाँ जहाँ हरीजन के पैर पड्ते है ऐसे धरती की रज याने धरती का बारीक से बारीक कण भी किसी के मुख मे जायेगी तो उस गुण से जिसके मुख मे रज पडी उसे कैवल्य भक्ती उपजेगी ।।।१८।।

जन की झूटण गिरत हे ।। भूले पावे कोय ।।
ओ कण मुख मे जात हे ।। भक्त ऊपजे सोय ।।१९।।

कैवली संतोके भोजनके पश्चात उनके भोजन पात्रमे कभी कभी अन्न बाकी रहता इस अन्न को झूठन कहते । ऐसा कण सरीसा झूठन किसीके मुखमे भुल चूकमे पड जाता तो उस कणके प्रतापसे उस प्राणमे कैवल्य भक्ती उपजती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।१९।।

प्रम भक्त सो ऊपजे ।। सो आ कही सुणाय ।।
सुणज्यो सब सुखराम के ।। साध संत सब आय ।।२०।।

जिन जिन बातोसे परमभक्ती उपजती है यह मैने कहकर सुनाया । तो उसे सभी जगतके

नर नारी एवम साधू संत सुनो ।।।२०।।

पुरब जनम मे भजन रे ।। कियो जात कूळ खोय ।।
ताँ कूं सुण सुखराम के ।। भक्त प्रगटे जोय ।।२१।।

जिसने जाती कुल की भक्तीयाँ त्यागकर पिछ्ले जन्ममे परमभक्ती की परंतु अपुरे भक्ती के कारण परमपद नही जा सके ऐसे सभी संतो को इस जन्म मे भक्ती प्रगटती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२१।।

पुरब जन्म मे भक्त रे ।। भजन कियो भरपूर ।।
जे निपजे सुखराम के ।। मिलत चढे मुख नूर ।।२२।।

जिसने पूर्व जन्म मे भक्ती याने रामजी का सतसंगत और भजन भरपूर किया ऐसे संतो मे इस जन्म मे भक्ती निपजती और भक्ती निपजते ही उन संतो के चेहरेपर परमपद मिलने का तेज झलकता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२२।।

अे गुण पाछे म्हे कहया ।। तेविस साख के माय ।।
प्रम भक्त सुखराम के ।। या बिध ऊपजे आय ।।२३।।

मैने पिछ्ले बाईस साखीयोमें जिन विधियोसे परमपद की भक्ती उपजती वे गुण बताये है । वे सभी गुण जगतके सभी ज्ञानी,ध्यानी,साधू संत,नर नारी समजो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२३।।

।। इति भक्त ऊपजे को अंग संपूरण ।।